विचार प्रवाह

बुढ़ापा नहीं, दूसरा अवसर

सेवानिवृत्ति के बाद जीवन रुकता नहीं, बल्कि अनुभव, आत्मनिर्भरता और उद्देश्य के साथ एक नया अध्याय शुरू होता है

दादाजी, अब तो आपको कोई काम ही नहीं करना पड़ता होगा... कितना मज़ा आता होगा!

पोते ने मासूमियत से पूछा।

दादाजी मुस्कुराए, लेकिन उनकी आँखों में एक अनकहा खालीपन था।

उन्होंने धीरे से कहा, बेटा, काम से छुट्टी मिलना आसान है, लेकिन ज़रूरी होने का एहसास खो देना बहुत कठिन होता है।

पोता कुछ समझ नहीं पाया। वह खेलने चला गया। लेकिन दादाजी देर तक उसी कुर्सी पर बैठे रहे। उन्हें शायद पहली बार नहीं, बल्कि हर दिन यह महसूस होता था कि समय तो उनके पास बहुत है, पर किसी को उनकी ज़रूरत पहले जैसी नहीं रही।

यही भावना आज दुनिया भर के करोड़ों वरिष्ठ नागरिकों के भीतर चुपचाप जन्म ले रही है।

हम अक्सर सोचते हैं कि बुढ़ापे की सबसे बड़ी समस्या बीमारी, कमज़ोर शरीर या बढ़ते इलाज का खर्च है। लेकिन मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों का मानना है कि इन सबसे बड़ा संकट है-अपने जीवन पर नियंत्रण खो देना और स्वयं को अनुपयोगी महसूस करने लगना। यही आधुनिक समाज का वास्तविक सिल्वर क्राइसिस है।

कुछ दशक पहले तक भारतीय परिवारों में बुज़ुर्ग घर के मुखिया होते थे। उनके अनुभव को निर्णय का आधार माना जाता था। घर में कोई विवाह हो, खेती का निर्णय हो, व्यापार हो या बच्चों की शिक्षा-अंतिम सलाह अक्सर उन्हीं से ली जाती थी। वे केवल परिवार के सदस्य नहीं थे, बल्कि परिवार की स्मृति, संस्कृति और विवेक के संरक्षक थे।

आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं।

रोज़गार ने बच्चों को महानगरों तक पहुँचा दिया।

संयुक्त परिवार छोटे फ्लैटों में बदल गए।

तकनीक ने संवाद बढ़ाया, लेकिन साथ रहने का समय कम कर दिया।

धीरे-धीरे बुज़ुर्ग घर में मौजूद तो हैं, पर निर्णयों से अनुपस्थित होते जा रहे हैं। सबसे दुखद बात यह है कि यह परिवर्तन अक्सर प्रेम के नाम पर होता है।

आप रहने दीजिए...

अब आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं...

हम संभाल लेंगे...

सुनने में ये वाक्य सम्मान जैसे लगते हैं, लेकिन यदि हर निर्णय किसी और के हाथ में चला जाए तो व्यक्ति के भीतर यह भावना जन्म लेने लगती है कि अब उसकी आवश्यकता समाप्त हो चुकी है। जबकि आत्मसम्मान का सबसे बड़ा आधार यही है कि व्यक्ति स्वयं को निर्णय लेने योग्य महसूस करे।

बुढ़ापे का दूसरा संकट है पहचान का खो जाना।

कल्पना कीजिए उस व्यक्ति की, जिसने चालीस वर्षों तक शिक्षक बनकर हजारों विद्यार्थियों को पढ़ाया हो, या डॉक्टर बनकर अनगिनत लोगों का इलाज किया हो। सेवानिवृत्ति के बाद एक दिन अचानक उसकी पहचान केवल रिटायर्ड शब्द तक सीमित हो जाती है।

यह बदलाव केवल नौकरी का नहीं होता।

यह मन का परिवर्तन होता है।

व्यक्ति स्वयं से पूछने लगता है-अब मेरी भूमिका क्या है?

यदि इस प्रश्न का उत्तर न मिले, तो धीरे-धीरे जीवन उद्देश्यहीन लगने लगता है। यही कारण है कि विशेषज्ञ मानते हैं कि सेवानिवृत्ति की तैयारी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानसिक भी होनी चाहिए।

लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि जीवन का सबसे सुंदर अध्याय समाप्त हो गया।

वास्तव में, यह वह समय है जब व्यक्ति अपने अनुभवों को समाज को लौटा सकता है।

जिस दिन हम अपने वरिष्ठ नागरिकों को दया नहीं, बल्कि भागीदारी देंगे, उसी दिन बुढ़ापा बोझ नहीं, जीवन का सबसे गरिमामय अध्याय बन जाएगा।

– डॉ. रीटा अरोड़ा, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर करनाल

कल्पकथा एवं शब्द सागर का काव्य-संगम

इंदौर शब्द सागर समूह, इंदौर एवं कल्पकथा साहित्य संस्था, उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साप्ताहिक ऑनलाइन काव्यगोष्ठी साहित्यिक समन्वय एवं सृजनशीलता का सुंदर उदाहरण बनी। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अखिलेश राव ने तथा मुख्य अतिथि अरुण सक्सेना अपेक्षित ने की। संचालन शब्द सागर की ओर से मनीषा पटेल मनु एवं कल्पकथा की ओर से भास्कर सिंह माणिक ने किया। शब्द सागर की ओर से डॉ. अखिलेश राव, अरुण सक्सेना अपेक्षित, मंजू मित्तल, दीप्ति गुप्ता, अनिल ओझा, दिनेश दवे, प्रशांत राव चौरसे, पूनम सिंह प्रियश्री, नीरल मंगला, मनीषा पटेल मनु तथा कल्याणी गुप्ता कृति ने काव्यपाठ किया। वहीं कल्पकथा परिवार की ओर से विजय रघुनाथराव डांगे के संगीतमय शिव-भजन सहित भास्कर सिंह माणिक, बिनोद कुमार पाण्डेय, प्रमोद कुमार पटले, माणिका वर्मा, दिनेश कुमार दुबे, शोभा प्रसाद, भगवान दास शर्मा प्रशांत एवं स्मापति मौर्य की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को भाव-विभोर किया अध्यक्ष डॉ. अखिलेश राव एवं मुख्य अतिथि अरुण अपेक्षित ने साहित्य में सकारात्मक चिंतन, सृजनशीलता और मानवीय मूल्यों के संरक्षण पर बल दिया। अंत में दोनों संस्थाओं के प्रमुखों ने सभी प्रतिभागियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्टून कोना

अपराजित वीर योद्धा बाजीराव पेशवा देशप्रेम की अद्भुत मिसाल

इन्दौर। श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, लिवा साहित्य सेवा समिति एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता अध्ययनशाला की इस त्रिवेणी द्वारा आयोजित समिति सभागार में अपराजित वीर योद्धा बाजीराव पेशवा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर नाटक के रुप में और उनकी जीवनी मंच से प्रस्तुत कर उपस्थितजनों को भाव-विभोर कर दिया। उनमें राष्ट्र-प्रेम की भावना जागृत कर दी।

चन्द्रकांत भालेराव जिनकी कृति ''स्वयंसिद्ध श्रीमंत बाजीराव पेशवा हिन्दवी स्वराज विस्तारक'' का लोकार्पण भी समिति में किया गया था। उनके साथ श्री नील माधव भुसारी ने बाजीराव पेशवा के वीरतापूर्ण जीवन को मंच से प्रस्तुत किया। साथ ही लघु फिल्म भी दिखाई गई। जो अपना इतिहास भूल जाते है उनका भूगोल अपने आप बिगड़ जाता है। देश-प्रेम से बढ़कर व्यक्ति के जीवन में कुछ भी नहीं होता है। मात्र 40 वर्ष की उम्र में बाजीराव पेशवा ने कई लड़ाइयां लड़ी और कहीं भी पराजित नहीं हुए। दिल्ली, भोपाल, कोटा, आगरा, रीवा महाराष्ट्र और कर्नाटक आदि कई स्थानों पर मुगलों से लोहा लिया और उन्हें पराजित किया। छत्रपति शिवाजी जो हिन्दवी स्वराज के संस्थापक रहे, उन्हीं के कार्य को बाजीराव पेशवा ने अपनी विद्वता व वीरता से आगे बढ़ाया और अंत में माँ नर्मदा के किनारे रावड़खेड़ी में जीवन का उत्सर्ग किया, जहां आज भी सैकड़ों लोग उन्हें सादर पुष्पांजलि देने जाते हैं। श्री चन्द्रकांत भालेराव एवं श्री भुसारीजी ने बाजीराव पेशवा के जन्म से लेकर उनसे जुड़ी तमाम घटनाओं को अपनी वाणी से प्रस्तुत कर श्रोताओं के समक्ष देशप्रेम को जागृत किया। उनकी प्रस्तुति ने इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, रीवा, काशी, उदयपुर, जयपुर, पुणे और दक्षिण भारत के तमाम स्थानों का जिक्र आया। बाजीराव पेशवा का नारा था-व्यक्तिगत जीवन से बढ़कर समाज का जीवन होता है और देश-प्रेम से बढ़कर कोई प्रेम नहीं होता है। आरंभ में दीप प्रज्वलन के पश्चात् उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किये गये। इन कथाकारों का स्वागत समिति के प्रधानमंत्री श्री अरविन्द जवलेकर, संयोजक श्री अश्विन खरे तथा डॉ. सोनाली नरगुन्दे के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संघ के प्रमुख प्रचारक डॉ. मुकेश मोढ़ का भी स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रचार मंत्री हरेराम वाजपेयी ने किया एवं आभार डॉ. सोनाली नरगुन्दे के द्वारा व्यक्त किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री 'वीणा' के संपादक राकेश शर्मा के अलावा श्री राजेश शर्मा, अरविंद ओझा, उमेश पारेख, राजेश शुक्ल, अनिल भोजे, मीनाक्षी स्वामी, घनश्याम यादव, पुष्पेन्द्र दुबे, डॉ. अनुराधा शर्मा, त्रिपुरारीलाल शर्मा, प्रदीप नवीन, त्रयम्बक चांदोरकर, श्री मोडक आदि काफी संख्या में सुधीजन, पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थी उपस्थित थे।

जो लोग दुनिया को कुछ अच्छा देकर जाना चाहते हैं, वे पौधे लगाते हैं

इन्दौर। बुजुर्गों को पेड़ों की संज्ञा दी जाती है, जो स्वयं जीवनभर धूप में तपकर अपने नि:स्वार्थ प्रेम, अनुभव, संस्कार और आशीर्वाद की छाँव में पूरे परिवार को संभाले रखते हैं।

स्वयं धूप में खड़े होकर, आने वाली पीढ़ियों के लिए की शुद्ध हवा और छाँव की व्यवस्था

पेड़ों के नाम समर्पित करने की इस सोच ने कार्यक्रम को और भी खास बना दिया।

आनंदम सीनियर सिटीज़न सेंटर के सचिव श्री एस.बी. खंडेलवाल ने कहा, पौधरोपण करना आसान है, कुछ कमाता है, लेकिन सबसे खूबसूरत विरासत वही होती है, जो उसके जाने के बाद भी लोगों के काम आए। फिर बात पर्यावरण संरक्षण की हो, तो दायित्व कई गुना बढ़ जाता है। इसी सोच के साथ, आनंदम और उसकी महिला इकाई आनंदिनी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में आनंदम परिवार के 40 सदस्यों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और पौधों की देखभाल का संकल्प भी लिया। अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में संस्था के सदस्य कर्नल हर्ष कौल द्वारा 20 पौधों का सहयोग दिया गया। ऐसे में, अपने जन्मदिन को लेकिन असली सेवा तब है, जब उन्हें बड़ा होते हुए देखने की जिम्मेदारी भी निभाई जाए। हमें खुशी है कि आनंदम परिवार सेवा के हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी निभा रहा है। शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो या पर्यावरण... बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ जाने में है। आज लगाए गए ये 66 पौधे सिर्फ मिट्टी में रोपे गए पौधे नहीं हैं, बल्कि 66 ऐसी उम्मीदें हैं, जो आने वाले समय में हजारों लोगों को छाँव देंगी।

इस बात की मिसाल उस समय दिखाई दी, जब आनंदम सीनियर सिटीज़न सेंटर के वरिष्ठ सदस्यों ने सोमवार को शहर के पितृ पर्वत पर कुल 66 पौधे लगाए।

इंसान अपने जीवन में बहुत

132 केवी ट्रांसमिशन लाइन पर शटडाउन, सुरक्षा प्रक्रिया और इंसुलेटर बदलने का दिया प्रशिक्षण

एमपी ट्रांसको के प्रशिक्षु अभियंताओं ने सीखा लाइन मेंटेनेंस का हुनर

इंदौर (ई)। मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने चार प्रशिक्षु सहायक अभियंताओं को 132 केवी ट्रांसमिशन लाइन अनुरक्षण कार्य का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण के दौरान फ्लैशओवर से प्रभावित डिस्क इंसुलेटर बदलने की प्रक्रिया का मौके पर प्रत्यक्ष अवलोकन कराया गया।

प्रशिक्षुओं को शटडाउन लेने की प्रक्रिया, वर्क परमिट प्रणाली, लाइन को सुरक्षित आइसोलेट करने, सुरक्षा मानकों और उपयोगी उपकरणों की जानकारी दी गई। ईएचटी लाइनों पर कार्य के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों और तकनीकी प्रक्रियाओं से भी अवगत कराया गया।

वरिष्ठ अभियंताओं ने कराई फील्ड ट्रेनिंग

एमपी ट्रांसको भोपाल के कार्यपालन अभियंता रवि चौरसिया और सहायक अभियंता अंकित महरौलिया ने प्रशिक्षण दिया। उन्होंने शटडाउन प्रबंधन, सुरक्षा उपायों और ट्रांसमिशन लाइन अनुरक्षण की व्यावहारिक बारीकियां समझाईं।

कंपनी के अनुसार, फील्ड प्रशिक्षण से प्रशिक्षु अभियंताओं को वास्तविक कार्य परिस्थितियों का अनुभव मिलेगा, जिससे विद्युत ट्रांसमिशन प्रणाली के सुरक्षित और प्रभावी संचालन में मदद मिलेगी।

स्मृति शेष

श्री पी. के. शुक्ला

मेरे पूज्य पिताजी, स्वर्गीय श्री पी. के. शुक्ला साहब को मैंने अपने शिशुकाल से ही एक आदर्श पिता के रूप में देखा। वे केवल एक समर्पित पिता ही नहीं, बल्कि हमारे पूरे परिवार के लिए एक सुदृढ़ स्तम्भ थे। उन्होंने जीवन के प्रत्येक चरण में अपने परिवार को संबल प्रदान किया तथा समाज के प्रति भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन एक आदर्श पुरुष के रूप में किया। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, ईमानदारी, सादगी, कर्तव्यनिष्ठा एवं सेवा-भाव का अद्भुत समन्वय था। उन्होंने सदैव अपने कर्मों से यह सिद्ध किया कि जीवन में सफलता केवल पद और प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि अपने सिद्धांतों और मूल्यों पर अडिग रहकर समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने से प्राप्त होती है।

उन्होंने मुझे केवल एक पुत्री के रूप में नहीं, बल्कि एक पुत्र के समान

स्नेह, विश्वास एवं अवसर प्रदान करते हुए मेरा पालन-पोषण किया। उन्होंने कभी भी मेरे और किसी पुत्र के अधिकारों अथवा दायित्वों में कोई भेद नहीं किया। मेरे जीवन के प्रत्येक सुखद क्षण में वे मेरी खुशियों के सहभागी रहे तथा प्रत्येक कठिन परिस्थिति में चट्टान की तरह मेरे साथ खड़े रहे। आज यदि मैं स्वयं अपने पैरों पर खड़ी होकर उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास कर पा रही हूँ, तो उसका संपूर्ण श्रेय उनके द्वारा दिए गए संस्कारों, मार्गदर्शन एवं विश्वास को जाता है।

उनका सपना था कि मैं प्रशासनिक सेवा में जाकर समाज और राष्ट्र की सेवा करूँ। इसी उद्देश्य से उन्होंने मुझे उच्च शिक्षा दिलवाई तथा निरंतर प्रेरित किया कि मैं अच्छे संस्थान से दिल्ली जाकर अध्ययन करूँ और प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होऊँ। मैंने अपनी ओर से पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ प्रयास किया, किन्तु नियति को कुछ और ही स्वीकार था। अंततः मेरा मार्ग वकालत के क्षेत्र की ओर मुड़ गया। आज मुझे यह अनुभव होता है कि संभवतः यही ईश्वर की इच्छा थी, जिससे मैं अपने पिताजी की विरासत को आगे बढ़ा सकूँ।

मैंने अपने पिताजी को बचपन से ही न्यायालय में वकालत करते हुए देखा था। उनके व्यक्तित्व, कार्यशैली और न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण धीरे-धीरे मेरा रुझान भी इसी क्षेत्र की ओर होने लगा। यही कारण रहा कि एल.एल.बी. के प्रथम वर्ष से ही मैंने उनके साथ न्यायालय एवं उनके कार्यालय में कार्य करना प्रारंभ कर दिया। उनके सान्निध्य में कार्य करते हुए मुझे उनके अनुभव, ज्ञान और व्यावहारिक समझ का भरपूर लाभ मिला, जो आज भी मेरे प्रत्येक कार्य में मेरा मार्गदर्शन करता है।

जब मैंने उनके साथ कार्य करना प्रारंभ किया, तब उन्होंने मुझे कभी भी इस आधार पर कोई विशेष रियायत नहीं दी कि मैं उनकी पुत्री हूँ। वे सदैव मुझसे एक जूनियर अधिवक्ता की तरह ही कार्य करवाते थे। उनके लिए अनुशासन और कार्य के प्रति समर्पण सर्वोपरि था। उनका स्पष्ट मानना था कि प्रत्येक अधिवक्ता, जो वकालत के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहता है, उसे अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत जिला न्यायालय से ही करनी चाहिए, क्योंकि एक सक्षम अधिवक्ता की वास्तविक नींव वहीं तैयार होती है। जिला न्यायालय में प्रारंभिक स्तर पर आवेदन तैयार करना, वादों की प्रक्रिया को समझना, गवाहों का परीक्षण एवं प्रतिपरीक्षण करना, न्यायालयीन कार्यप्रणाली को निकट से देखना तथा कानून की छोटी-छोटी बारीकियों को सीखने का अवसर प्राप्त होता है। उनका विश्वास था कि जो अधिवक्ता इन आधारभूत बातों को गंभीरता से सीख लेता है, वही आगे चलकर अपने क्षेत्र में सफल एवं दक्ष बनता है।

मेरे स्वर्गीय पिताजी केवल एक सफल अधिवक्ता ही नहीं थे, बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी अत्यंत सक्रिय एवं समर्पित व्यक्तित्व थे। वे जिला अभिभाषक संघ तथा उच्च न्यायालय अभिभाषक संघ में कई वर्षों तक अध्यक्ष के पद पर रहे तथा अपने कार्यकाल में अधिवक्ताओं के हितों और न्याय व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके कार्यकाल में जिला न्यायालय में प्रथम लोक अदालत का सफलतापूर्वक आयोजन एवं संपादन हुआ, जो उनके दूरदर्शी नेतृत्व एवं न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

उनके पदचिह्नों पर चलते हुए मैंने भी सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने का प्रयास किया है। मानवाधिकार, श्रमिक हितों, अवयस्क एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों की शिक्षा के उद्देश्य से एक एन.जी.ओ. की स्थापना कर उसके माध्यम से निरंतर कार्य कर रही हूँ। इसके अतिरिक्त ब्राह्मण समाज के विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए समाजहित में अनेक कार्य किए हैं तथा भविष्य में भी उसी समर्पण और निष्ठा के साथ समाज सेवा के इस मार्ग पर निरंतर अग्रसर रहने का संकल्प रखती हूँ।

आज जब मैं अपने स्वर्गीय पिताजी की प्रथम पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण करती हूँ, तो उनकी प्रत्येक सीख, प्रत्येक शब्द और उनके साथ बिताया प्रत्येक क्षण मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर मेरे हृदय में जीवंत हो उठता है। वे आज भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके आदर्श, उनके संस्कार, उनके सिद्धांत और उनका मार्गदर्शन सदैव मेरे जीवन का पथ प्रशस्त करते रहेंगे।

मैं इस लेख के माध्यम से अपने पूज्य स्वर्गीय पिताजी को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वे मुझे इतनी शक्ति, धैर्य एवं सद्बुद्धि प्रदान करें कि मैं उनके आदर्शों एवं पदचिह्नों पर चलते हुए उनके अधूरे कार्यों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा सकूँ तथा अपने जीवन एवं कार्यों से उनके नाम को सदैव गौरवान्वित करती रहूँ। यही मेरे लिए उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

— अधिवक्ता अपूर्वा शुक्ला

स्थान- चैम्बर नं. 44, स्टेट बार काउंसिल बिल्डिंग, हाई कोर्ट कैंपस, इंदौर, मध्य प्रदेश - 452001, सम्पर्क- 9171900032, 9818192764, 0731-3153874

बढ़ती महंगाई और लंबी जीवन प्रत्याशा के बीच वित्तीय सुरक्षा के लिए तीनों योजनाओं को समझना जरूरी

सेवानिवृत्ति की तैयारी: ईपीएफ, पीपीएफ या एनपीएस कौन है बेहतर विकल्प?

इन्दौर। बढ़ती महंगाई और लंबी जीवन प्रत्याशा को देखते हुए, सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। केवल बचत पर्याप्त नहीं, बल्कि नियमित आय देने वाली निवेश योजनाएं आवश्यक हैं।

भारत में कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ), सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ) और राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) तीन प्रमुख विकल्प हैं, जिनके नियम, जोखिम, रिटर्न और कर लाभ भिन्न हैं। संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए ईपीएफ एक मजबूत आधार है, जहां नियोक्ता-कर्मचारी योगदान से बड़ा फंड बनता है। सरकारी ब्याज दर के साथ यह नौकरीपेशा लोगों के लिए

सुरक्षित बचत है। वहीं पीपीएफ किसी भी भारतीय नागरिक के लिए सुरक्षित और सरकारी गारंटी वाली योजना है। 7.1 फीसदी ब्याज दे रही यह योजना, निवेश, ब्याज और परिपक्वता राशि पर कर छूट (ईईई) के कारण दीर्घकालिक निवेश का लोकप्रिय विकल्प है। एनपीएस अधिक रिटर्न चाहने वाले और सीमित बाजार जोखिम उठाने को तैयार निवेशकों के लिए बेहतर है। यह शेयर, बॉन्ड आदि में निवेश करती है, बाजार-आधारित प्रतिफल के साथ अतिरिक्त कर लाभ देती है। वित्तीय विशेषज्ञ तीनों योजनाओं के संतुलित संयोजन की सलाह देते हैं ताकि सुरक्षा, कर बचत और बेहतर रिटर्न का लाभ मिल सके। नियमित निवेश और योजना की समीक्षा भविष्य की वित्तीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।